ISSN: 2249-7196
IJMRR/May. 2024/ Volume 14/Issue 3/124-132
अनिता मेहता / International Journal of Management Research & Review

लिंग के आधार पर छात्र-शिक्षकों की भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन

अनिता मेहता[1], डॉ. बाबु राम मौर्या[2]
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड[1]
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड[2]

सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य झारखंड के हजारीबाग जिले में स्थित बी.एड. महाविद्यालयों के छात्र-शिक्षकों की भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना था। शोधकर्ता ने इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया तथा यादृच्छिक स्तरीकृत प्रतिचयन तकनीक द्वारा कुल 200 छात्र-शिक्षकों (100 पुरुष व 100 महिला) का चयन किया। आँकड़ों के संकलन हेतु यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित भावनात्मक परिपक्वता मापनी, डॉ. नलिनी राव की सामाजिक परिपक्वता मापनी तथा डॉ. रंजना कुमारी के नैतिक निर्णय परीक्षण का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध परिणामों से ज्ञात हुआ कि महिला छात्र-शिक्षिकाओं की भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता पुरुष छात्र-शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च स्तर की पाई गई, तथा नैतिक निर्णय के क्षेत्र में भी दोनों समूहों के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर देखा गया। अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक परिपक्वता, नैतिक निर्णय, छात्र-शिक्षक, लिंग-आधारित तुलना

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है और इसमें शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक केवल विषय-वस्तु का ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, चरित्र निर्माण और मूल्य संवर्धन का कुशल मार्गदर्शक होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में गुणवत्ता वृद्धि और शिक्षकों के समग्र व्यक्तित्व विकास पर विशेष बल दिया है। छात्र-शिक्षक भविष्य के राष्ट्र निर्माता होते हैं, अतः उनकी भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय क्षमता का विकास अत्यंत आवश्यक है। भावनात्मक परिपक्वता वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर परिस्थितियों के अनुरूप संतुलित प्रतिक्रिया देता है। एक भावनात्मक रूप से परिपक्व शिक्षक ही कक्षा-कक्ष की चुनौतियों, छात्रों के व्यवहारगत समस्याओं और शैक्षिक दबावों का प्रभावी ढंग से सामना कर सकता है। खन्ना (2011) के अनुसार कामकाजी एवं गैर-कामकाजी माताओं के किशोर बच्चों की भावनात्मक

बुद्धिमत्ता का सामाजिक परिपक्वता से गहरा संबंध है। केल्टनर, हॉर्बर्ग एवं ओवेस (2006) ने स्पष्ट किया कि नैतिक अंतर्ज्ञान के रूप में भावनाएँ सामाजिक सोच और व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

नैतिक निर्णय व्यक्ति की वह संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा वह उचित-अनुचित में भेद करता है। कोहलबर्ग (1969) के नैतिक विकास सिद्धांत के अनुसार नैतिक तर्क एक क्रमिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के विकास के साथ-साथ परिपक्व होती है। कोहलबर्ग (1976) ने आगे चलकर बताया कि नैतिक चरण और नैतिकता संज्ञानात्मक-विकासात्मक दृष्टिकोण से जुड़े हैं। हजारीबाग जिला झारखंड राज्य का एक महत्वपूर्ण शैक्षिक केंद्र है जहाँ अनेक बी.एड. महाविद्यालय कार्यरत हैं और हर वर्ष हजारों छात्र-शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। यह क्षेत्र शैक्षिक रूप से विकासशील है जहाँ पुरुष साक्षरता दर 80.01% एवं महिला साक्षरता दर 58.95% है। ऐसे क्षेत्र में लिंग-आधारित अंतर का अध्ययन विशेष प्रासंगिक हो जाता है। शोधकर्ता ने अनुभव किया कि इस क्षेत्र में पुरुष और महिला छात्र-शिक्षकों के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विकास के बीच भिन्नताएँ हो सकती हैं, जिनका वैज्ञानिक अध्ययन शिक्षक शिक्षा की नीति-निर्माण प्रक्रिया को सुदृढ़ करेगा।

2. साहित्य समीक्षा

विभिन्न शोधकर्ताओं ने भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय पर विस्तृत अध्ययन किए हैं। कौर (2013) ने किशोरों के नैतिक निर्णय के सहसंबंध के रूप में मानसिक स्वास्थ्य पर अध्ययन कर बताया कि नैतिक निर्णय एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक संबंध है। कोचान्स्का (1991) ने अपने अध्ययन में अपराधबोध और विवेक के विकास में समाजीकरण एवं स्वभाव की भूमिका का विश्लेषण किया तथा बताया कि नैतिक विकास पारिवारिक परिवेश से अत्यधिक प्रभावित होता है। कोचान्स्का (1997) ने आगे माताओं एवं उनके छोटे बच्चों के बीच पारस्परिक उत्तरदायी अभिविन्यास के माध्यम से प्रारंभिक समाजीकरण की प्रक्रिया को समझाया। खदीजा एवं कैसर (2009) ने किशोरों में नैतिक निर्णय की अनुरूपता पर अध्ययन कर लिंगगत अंतर के विभिन्न आयामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया। केर्पेलमैन एवं स्मिथ-एडकॉक (2005) ने महिला किशोरों की अपराधी गतिविधियों में माता-पिता के साथ संबंधों के प्रतिच्छेदन का अध्ययन किया तथा सिद्ध किया कि पारिवारिक संबंध सामाजिक एवं नैतिक विकास का प्रमुख निर्धारक है। कोपोको (2007) ने पालन-पोषण शैलियों एवं किशोरों पर अध्ययन कर बताया कि पालन-पोषण की विधियाँ युवाओं की सामाजिक परिपक्वता को प्रभावित करती हैं।

कोहलबर्ग (1964) के अनुसार नैतिक चरित्र एवं नैतिक विचारधारा का विकास एक चरणबद्ध प्रक्रिया है। कोहलबर्ग (1969) ने समाजीकरण के लिए संज्ञानात्मक-विकासात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। कोहलबर्ग (1976) ने नैतिक चरणों को छह स्तरों में विभाजित कर नैतिक विकास का व्यापक मॉडल प्रस्तुत किया। क्रेब्स एवं डेंटन (2006) ने नैतिकता के संज्ञानात्मक-विकासात्मक दृष्टिकोण की व्याख्यात्मक सीमाओं का विश्लेषण किया और बताया कि नैतिक तर्क केवल चरणों तक सीमित नहीं है। क्रकमर एवं वाल्केनबर्ग (1999) ने बच्चों की उचित-अनुचित हिंसा की नैतिक व्याख्या एवं टेलीविजन देखने के साथ इसके संबंध का आकलन करने हेतु एक पैमाना विकसित किया। प्रेहन आदि (2007) ने अपने न्यूरोसाइंस आधारित अध्ययन में बताया कि नैतिक निर्णय क्षमता में व्यक्तिगत अंतर सामाजिक-प्रामाणिक निर्णयों के तंत्रिका संबंधी सहसंबंधों को प्रभावित करते हैं। कृष्णन (1977) ने गैर-बौद्धिक कारकों एवं उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन कर सिद्ध किया कि भावनात्मक

एवं सामाजिक कारक शैक्षिक सफलता के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। कुमार एवं रितु (2013) ने वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता तथा व्यक्तित्व के मध्य महत्वपूर्ण संबंध पाया। उपरोक्त साहित्य समीक्षा से स्पष्ट है कि यद्यपि व्यक्तिगत चरों पर अनेक अध्ययन हुए हैं, परंतु हजारीबाग जिले के संदर्भ में इन तीनों चरों का एकीकृत लिंग-आधारित तुलनात्मक अध्ययन सीमित है, जिससे प्रस्तुत शोध की प्रासंगिकता सिद्ध होती है।

3. उद्देश्य

1. हजारीबाग जिले के पुरुष एवं महिला छात्र-शिक्षकों की भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. हजारीबाग जिले के पुरुष एवं महिला छात्र-शिक्षकों के नैतिक निर्णय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. परिकल्पनाएँ

$H_0$1: पुरुष एवं महिला छात्र-शिक्षकों की भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

$H_0$2: पुरुष एवं महिला छात्र-शिक्षकों के नैतिक निर्णय के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है, क्योंकि यह विधि वर्तमान स्थिति के व्यवस्थित विश्लेषण के लिए उपयुक्त मानी जाती है। शोध का अध्ययन क्षेत्र झारखंड राज्य का हजारीबाग जिला है। 2011 की जनगणना के अनुसार हजारीबाग जिले की कुल जनसंख्या 17,34,495 है, जिसमें पुरुष साक्षरता दर 80.01% एवं महिला साक्षरता दर 58.95% है। हजारीबाग जिले में लगभग 9-10 प्रमुख बी.एड. महाविद्यालय कार्यरत हैं, जिनमें सेंट कोलंबा कॉलेज, एस.बी.एम. टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, दौलत महतो मेमोरियल टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, गौतम बुद्ध टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज आदि सम्मिलित हैं। शोध की जनसंख्या में हजारीबाग जिले के विभिन्न बी.एड. महाविद्यालयों में अध्ययनरत समस्त छात्र-शिक्षक सम्मिलित थे। प्रतिदर्श चयन हेतु यादृच्छिक स्तरीकृत प्रतिचयन तकनीक का प्रयोग करते हुए कुल 200 छात्र-शिक्षकों (100 पुरुष एवं 100 महिला) का चयन पाँच विभिन्न बी.एड. महाविद्यालयों से किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु तीन मानकीकृत मापनियों का प्रयोग किया गया - (1) यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव (1990) द्वारा निर्मित भावनात्मक परिपक्वता मापनी (EMS), जिसमें कुल 48 कथन एवं पाँच आयाम सम्मिलित हैं; (2) डॉ. नलिनी राव की सामाजिक परिपक्वता मापनी (RSMS), जिसमें कुल 90 कथन हैं; (3) डॉ. रंजना कुमारी का नैतिक निर्णय परीक्षण (किशोरों हेतु), आगरा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान कक्ष, बेलनगंज, आगरा। शोधकर्ता ने स्वयं संबंधित महाविद्यालयों में जाकर महाविद्यालयीय प्रशासन की पूर्व अनुमति से उपरोक्त मापनियों का प्रशासन किया। समस्त उत्तरदाताओं से प्रश्नावलियाँ भरवाई गईं और गोपनीयता सुनिश्चित की गई। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी (माध्य, मानक विचलन) तथा अनुमानात्मक सांख्यिकी (टी-परीक्षण) का प्रयोग किया गया। सार्थकता का स्तर 0.05 निर्धारित किया गया।

6. परिणाम

तालिका 1: प्रतिदर्श का जनांकिकीय विवरण

क्रम	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1	पुरुष छात्र-शिक्षक	100	50.00%
2	महिला छात्र-शिक्षिकाएँ	100	50.00%
3	ग्रामीण पृष्ठभूमि	132	66.00%
4	शहरी पृष्ठभूमि	68	34.00%
5	कुल	200	100.00%

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक आँकड़ा संग्रह, हजारीबाग बी.एड. महाविद्यालय, 2024-25

तालिका 1 में अध्ययन में सम्मिलित कुल 200 छात्र-शिक्षकों का जनांकिकीय वितरण दर्शाया गया है, जिसमें पुरुष एवं महिला छात्र-शिक्षकों की समान भागीदारी (प्रत्येक 50%) रखी गई है ताकि लिंग-आधारित तुलना निष्पक्ष हो सके। ग्रामीण पृष्ठभूमि के 66% प्रतिभागी हजारीबाग जिले की 84.13% ग्रामीण जनसंख्या वितरण के अनुरूप हैं, जिससे प्रतिदर्श की प्रतिनिधित्व क्षमता सुनिश्चित होती है।

तालिका 2: लिंग के आधार पर भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या (N)	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	टी-मान	सार्थकता
पुरुष छात्र-शिक्षक	100	112.45	18.32	2.86	0.05 स्तर पर सार्थक
महिला छात्र-शिक्षिकाएँ	100	105.12	17.65		

स्रोत: सिंह एवं भार्गव EMS मापनी आधारित प्राथमिक आँकड़े, 2024-25 (न्यून प्राप्तांक उच्च भावनात्मक परिपक्वता का सूचक)

तालिका 2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि महिला छात्र-शिक्षिकाओं का माध्य प्राप्तांक (105.12) पुरुष छात्र-शिक्षकों (112.45) की तुलना में कम है। EMS मापनी में निम्न प्राप्तांक उच्च भावनात्मक परिपक्वता को दर्शाते हैं। प्राप्त टी-मान 2.86, तालिकात्मक मान 1.96 (df=198) से अधिक है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इससे स्पष्ट है कि महिला छात्र-शिक्षिकाएँ पुरुषों की अपेक्षा भावनात्मक रूप से अधिक परिपक्व हैं।

तालिका 3: लिंग के आधार पर सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या (N)	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	टी-मान	सार्थकता
पुरुष छात्र-शिक्षक	100	245.78	24.56	3.12	0.01 स्तर पर सार्थक
महिला छात्र-शिक्षिकाएँ	100	256.43	23.89		

स्रोत: नलिनी राव सामाजिक परिपक्वता मापनी आधारित प्राथमिक आँकड़े, 2024-25

तालिका 3 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि महिला छात्र-शिक्षिकाओं का सामाजिक परिपक्वता माध्य प्राप्तांक (256.43) पुरुष छात्र-शिक्षकों (245.78) से अधिक है। प्राप्त टी-मान 3.12 तालिकात्मक मान 2.58 से अधिक है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर अत्यंत सार्थक है। यह दर्शाता है कि महिला छात्र-शिक्षिकाएँ सामाजिक संबंधों, अंतर-वैयक्तिक व्यवहार और सामाजिक अनुकूलन में पुरुष छात्र-शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च स्तर पर हैं।

तालिका 4: लिंग के आधार पर नैतिक निर्णय का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या (N)	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	टी-मान	सार्थकता
पुरुष छात्र-शिक्षक	100	38.67	6.84	2.45	0.05 स्तर पर सार्थक
महिला छात्र-शिक्षिकाएँ	100	41.23	7.12		

स्रोत: रंजना कुमारी नैतिक निर्णय परीक्षण आधारित प्राथमिक आँकड़े, आगरा साइकोलॉजिकल रिसर्च सेल, 2024-25

तालिका 4 में नैतिक निर्णय के लिंग-आधारित तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि महिला छात्र-शिक्षिकाओं का माध्य प्राप्तांक (41.23) पुरुष छात्र-शिक्षकों (38.67) से उच्च है। प्राप्त टी-मान 2.45, तालिकात्मक मान 1.96 से अधिक है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः सिद्ध होता है कि नैतिक निर्णय क्षमता में लिंग-आधारित सार्थक अंतर विद्यमान है तथा महिला छात्र-शिक्षिकाएँ इस क्षेत्र में अग्रणी हैं।

तालिका 5: भावनात्मक परिपक्वता के आयामों का लिंग-आधारित विश्लेषण

आयाम	पुरुष माध्य	महिला माध्य	टी-मान	सार्थकता
भावनात्मक अस्थिरता	23.45	21.32	2.21	0.05
भावनात्मक प्रतिगमन	22.86	20.78	2.34	0.05
सामाजिक कुसमायोजन	23.12	21.45	2.05	0.05
व्यक्तित्व विघटन	21.78	20.95	1.34	असार्थक
स्वातंत्र्य का अभाव	21.24	20.62	1.12	असार्थक

स्रोत: सिंह एवं भार्गव EMS आयाम-वार प्राप्तांक, 2024-25

तालिका 5 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि भावनात्मक अस्थिरता, भावनात्मक प्रतिगमन एवं सामाजिक कुसमायोजन तीनों आयामों में महिला छात्र-शिक्षिकाओं का प्राप्तांक न्यून है, जो उनकी श्रेष्ठ भावनात्मक परिपक्वता का सूचक है। व्यक्तित्व विघटन एवं स्वातंत्र्य के अभाव आयामों में लिंग-आधारित अंतर सार्थक नहीं पाया गया, जो दर्शाता है कि कुछ व्यक्तित्व विशेषताओं में दोनों लिंग समान विकास स्तर पर हैं।

तालिका 6: सामाजिक परिपक्वता के आयाम-वार वितरण

आयाम	पुरुष माध्य	महिला माध्य	अंतर
व्यक्तिगत पर्याप्तता	82.34	86.45	4.11
अंतर-वैयक्तिक पर्याप्तता	81.23	85.78	4.55
सामाजिक पर्याप्तता	82.21	84.20	1.99

स्रोत: नलिनी राव RSMS आयाम-वार प्राप्तांक, हजारीबाग सर्वेक्षण 2024-25

तालिका 6 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि महिला छात्र-शिक्षिकाओं ने सामाजिक परिपक्वता के सभी तीनों आयामों में पुरुषों से बेहतर प्रदर्शन किया है। सबसे अधिक अंतर अंतर-वैयक्तिक पर्याप्तता (4.55) में पाया गया, जो दर्शाता है कि महिलाएँ सामाजिक संबंध स्थापित करने और बनाए रखने में अधिक कुशल हैं। यह प्रवृत्ति शिक्षक व्यवसाय के लिए विशेष महत्वपूर्ण है।

तालिका 7: परिकल्पना परीक्षण सारांश

क्रम	परिकल्पना	टी-मान	सार्थकता स्तर	निष्कर्ष
1	भावनात्मक परिपक्वता में लिंगगत अंतर नहीं	2.86	0.05	परिकल्पना अस्वीकृत
2	सामाजिक परिपक्वता में लिंगगत अंतर नहीं	3.12	0.01	परिकल्पना अस्वीकृत
3	नैतिक निर्णय में लिंगगत अंतर नहीं	2.45	0.05	परिकल्पना अस्वीकृत

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण, 2024-25

तालिका 7 परिकल्पना परीक्षण का संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करती है। तीनों शून्य परिकल्पनाएँ सांख्यिकीय रूप से अस्वीकृत हुई हैं। यह सिद्ध करता है कि लिंग एक ऐसा महत्वपूर्ण चर है जो छात्र-शिक्षकों की भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय तीनों मनोवैज्ञानिक चरों पर सार्थक प्रभाव डालता है। तीनों ही क्षेत्रों में महिला छात्र-शिक्षिकाओं ने श्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

7. विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता सुधार हेतु नीतिगत निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं। तालिका 2 के निष्कर्षों से स्पष्ट है कि महिला छात्र-शिक्षिकाओं की भावनात्मक परिपक्वता पुरुष छात्र-शिक्षकों की अपेक्षा सार्थक

रूप से उच्च है। यह परिणाम खन्ना (2011) के अध्ययन से समर्थित है जिसमें कामकाजी एवं गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक परिपक्वता का घनिष्ठ संबंध पाया गया था। कोचान्स्का (1997) ने भी पारस्परिक उत्तरदायी अभिविन्यास के माध्यम से प्रारंभिक समाजीकरण की महत्ता बताई थी, जो महिलाओं की उच्च भावनात्मक परिपक्वता का संभावित आधार बनती है। इसका कारण यह है कि भारतीय सामाजिक परिवेश में महिलाओं को बचपन से ही धैर्य, सहनशीलता एवं भावनात्मक नियंत्रण की शिक्षा दी जाती है। केल्टनर, हॉर्बर्ग एवं ओवेस (2006) के अनुसार भावनाएँ नैतिक अंतर्ज्ञान के रूप में सामाजिक सोच एवं व्यवहार को निर्देशित करती हैं। अध्ययन के प्रथम उद्देश्य से जुड़ी तालिका 3 के परिणाम स्पष्ट करते हैं कि महिला छात्र-शिक्षिकाएँ सामाजिक परिपक्वता में पुरुषों से 0.01 सार्थकता स्तर पर श्रेष्ठ हैं। कुमार एवं रितु (2013) के निष्कर्ष भी इसी दिशा में जाते हैं जिसमें सामाजिक परिपक्वता को व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बताया गया है तथा वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता एवं व्यक्तित्व के मध्य सार्थक संबंध पाया गया था। कोपोको (2007) ने पालन-पोषण शैलियों के माध्यम से किशोरों के सामाजिक विकास पर प्रकाश डाला, जो हमारे निष्कर्षों को सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है। केर्पेलमैन एवं स्मिथ-एडकॉक (2005) ने महिला किशोरों के अध्ययन में दर्शाया था कि माता-पिता के साथ संबंध सामाजिक विकास के प्रमुख निर्धारक हैं। महिलाओं का सामाजिक संबंधों के प्रति प्राकृतिक रुझान, परिवार एवं समुदाय में उनकी सक्रिय भागीदारी और संवादात्मक प्रवृत्ति इस उच्च सामाजिक परिपक्वता के संभावित कारण हैं।

अध्ययन के द्वितीय उद्देश्य से संबंधित तालिका 4 के निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि नैतिक निर्णय में लिंग-आधारित सार्थक अंतर विद्यमान है। कौर (2013) के अध्ययन से भी समर्थन मिलता है कि नैतिक निर्णय एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध है। खदीजा एवं कैसर (2009) ने किशोरों में नैतिक निर्णय की अनुरूपता पर अध्ययन कर लिंगगत अंतर के विभिन्न आयाम प्रस्तुत किए थे। कोहलबर्ग (1976) के नैतिक विकास के चरण सिद्धांत के अनुसार महिलाएँ देखभाल-केंद्रित नैतिक तर्क की ओर अधिक प्रवृत्त होती हैं। प्रेहन आदि (2007) ने न्यूरोसाइंस आधारित अध्ययन में सिद्ध किया कि नैतिक निर्णय क्षमता में व्यक्तिगत अंतर तंत्रिका संबंधी सहसंबंधों से प्रभावित होते हैं। क्रेब्स एवं डेंटन (2006) ने नैतिकता के संज्ञानात्मक-विकासात्मक दृष्टिकोण की व्याख्यात्मक सीमाओं का विश्लेषण कर इस तथ्य की पुष्टि की कि नैतिक तर्क बहुआयामी है। तालिका 5 एवं 6 के विस्तृत आयाम-वार विश्लेषण से ज्ञात होता है कि महिला छात्र-शिक्षिकाएँ अंतर-वैयक्तिक पर्याप्तता में विशेष रूप से अग्रणी हैं। यह तथ्य शिक्षक शिक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षक का कार्य ही मूलतः अंतर-वैयक्तिक संबंधों पर आधारित होता है। कोचान्स्का (1991) के अध्ययन से समर्थन मिलता है कि अपराधबोध एवं विवेक के विकास में समाजीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कृष्णन (1977) ने गैर-बौद्धिक कारकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन कर सिद्ध किया कि भावनात्मक एवं सामाजिक कारक शैक्षिक सफलता के निर्धारक हैं।

तालिका 7 के परिकल्पना परीक्षण सारांश से तीनों शून्य परिकल्पनाओं की अस्वीकृति यह सिद्ध करती है कि लिंग एक महत्वपूर्ण चर है जो छात्र-शिक्षकों के समग्र मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करता है। कोहलबर्ग (1964, 1969) के नैतिक विकास सिद्धांत के अनुरूप यह स्पष्ट होता है कि नैतिक चरित्र एवं विचारधारा का विकास सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़ा होता है। क्रकमर एवं वाल्केनबर्ग (1999) ने भी बच्चों की नैतिक व्याख्या क्षमता को मीडिया जैसे सामाजिक कारकों से प्रभावित बताया था। यह निष्कर्ष शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में लिंग-संवेदी कार्यक्रमों, परामर्श सेवाओं एवं विशेष कार्यशालाओं के

समावेश की आवश्यकता को रेखांकित करता है। पुरुष छात्र-शिक्षकों के लिए विशेष भावनात्मक एवं सामाजिक कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए ताकि वे अपनी क्षमताओं को महिला सहपाठियों के समकक्ष ला सकें।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हजारीबाग जिले के बी.एड. छात्र-शिक्षकों की भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय इन तीनों मनोवैज्ञानिक चरों पर लिंग का सार्थक प्रभाव पड़ता है। महिला छात्र-शिक्षिकाएँ इन तीनों ही क्षेत्रों में पुरुष छात्र-शिक्षकों की तुलना में श्रेष्ठ पाई गईं। ये निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा संस्थानों, नीति निर्माताओं एवं शिक्षाविदों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में लिंग-संवेदी पाठ्यक्रम, भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण, सामाजिक कौशल विकास एवं नैतिक मूल्य शिक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। पुरुष छात्र-शिक्षकों हेतु विशेष परामर्श सेवाएँ, कार्यशालाएँ एवं अनुभवात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं हेतु एक आधार प्रस्तुत करता है जिस पर वे विस्तृत प्रतिदर्श एवं तुलनात्मक क्षेत्रीय अध्ययनों के माध्यम से शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि हेतु महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. कौर, जसवीर (2013)। किशोरों के बीच नैतिक निर्णय के सहसंबंध के रूप में मानसिक स्वास्थ्य। *अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक ई-जर्नल*, ISSN 2277-4262।
2. केल्टनर, डी., हॉर्बर्ग, ई., और ओवेस, सी. (2006)। नैतिक अंतर्ज्ञान के रूप में भावनाएँ सामाजिक सोच और व्यवहार को प्रभावित करती हैं। जे. फोर्गस (सं.), (पीपी. 161-175)। न्यूयॉर्क: मनोविज्ञान प्रेस।
3. केर्पेलमैन, जे.एल., और स्मिथ-एडकॉक, एस. (2005)। महिला किशोरों की अपराधी गतिविधि- माता-पिता के साथ संबंधों का प्रतिच्छेदन और प्रतिष्ठा में वृद्धि। *युवा और समाज*, 37(2), 176-200।
4. खदीजा मज़हर, फवाद कैसर (2009)। किशोरों में नैतिक निर्णय की अनुरूपता। *आरएमजे*, 34(1), 29-32।
5. खन्ना, सुप्रेरणा (2011)। कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं के किशोर बच्चों की सामाजिक परिपक्वता के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता। *स्वर्णिम शोध विचार*, खंड 1, अंक 2, अगस्त 2011, पृ. 1-4, ISSN 2231-5063।
6. कोचान्स्का, जी. (1991)। अपराधबोध और विवेक के विकास में समाजीकरण और स्वभाव। *बाल विकास*, 62, 1379-1392।
7. कोचान्स्का, जी. (1997)। माताओं और उनके छोटे बच्चों के बीच पारस्परिक रूप से उत्तरदायी अभिविन्यास: प्रारंभिक समाजीकरण के लिए निहितार्थ। *बाल विकास*, 68, 94-112।
8. कोहलबर्ग, एल. (1964)। नैतिक चरित्र और नैतिक विचारधारा का विकास। एम.एल. हाफमैन एवं एल.डब्ल्यू. हाफमैन (सं.), *बाल विकास अनुसंधान की समीक्षा* (पीपी. 381-431)। न्यूयॉर्क: रसेल सेज फाउंडेशन।
9. कोहलबर्ग, एल. (1969)। चरण और अनुक्रम: समाजीकरण के लिए संज्ञानात्मक-विकासात्मक दृष्टिकोण। डी.ए. गोस्लिन (सं.), *समाजीकरण सिद्धांत और अनुसंधान की पुस्तिका* (पीपी. 347-480)। शिकागो: रैंड मैकनैली।

10. कोहलबर्ग, एल. (1976)। नैतिक चरण और नैतिकता: संज्ञानात्मक-विकासात्मक दृष्टिकोण। टी. लिकोना (सं.), *नैतिक विकास और व्यवहार: सिद्धांत, अनुसंधान और सामाजिक मुद्दे* (पीपी. 31-53)। न्यूयॉर्क: होल्ट, राइनहार्ट और विंस्टन।
11. कोपोको, किम्बर्ली (2007)। पालन-पोषण शैलियाँ और किशोर। *कॉर्नेल विश्वविद्यालय सहकारी विस्तार*, 1-8।
12. क्रकमर, एम., और वाल्केनबर्ग, पी.एम. (1999)। बच्चों की उचित और अनुचित हिंसा की नैतिक व्याख्या और टेलीविजन देखने के साथ इसके संबंध का आकलन करने का एक पैमाना। *संचार अनुसंधान*, 26(5), 608-634।
13. क्रेब्स, डी.एल., और डेंटन, के. (2006)। नैतिकता के संज्ञानात्मक-विकासात्मक दृष्टिकोण की व्याख्यात्मक सीमाएँ। *मनोवैज्ञानिक समीक्षा*, 113(3), 672-675।
14. कृष्णन, ए.पी. (1977)। गैर-बौद्धिक कारक और शैक्षणिक-उपलब्धि पर उनका प्रभाव। *पेल. एसजेएन.*, 22, 1-7।
15. क्रिस्टिन प्रेहन, इसाबेल वार्टनबर्गर, काटजा मेरियाउ, क्रिस्टीना स्कीबे, ओलिवर आर. गुडएनफ, अर्नो विलरिंगर, एल्के वैन डेर मीर और हॉक आर. हीकेरेन (2007)। नैतिक निर्णय क्षमता में व्यक्तिगत अंतर सामाजिक-प्रामाणिक निर्णयों के तंत्रिका संबंधी सहसंबंधों को प्रभावित करते हैं। *न्यूरोसाइंस रिसर्च सेंटर, बर्लिन न्यूरोइमेजिंग सेंटर और चैरिटे यूनिवर्सिटी मेडिसिन बर्लिन*, चैरिटेप्लात्ज़ 1, 10117 बर्लिन, जर्मनी।
16. कुमार, दिनेश और रितु (2013)। वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उनके व्यक्तित्व के संबंध में सामाजिक परिपक्वता। *एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडायमेंशनल रिसर्च*, 2(8), अगस्त 2013, ISSN 2278-4853।
17. कुमारी, रंजना। *किशोरों के लिए नैतिक निर्णय परीक्षण के लिए मैनुअल*। आगरा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान कक्ष, बेलनगंज, आगरा-282004।